



हफ्तावार रिसाला : 436
Weekly Booklet : 436

Hazrate Sufyan Sauri Ke 87 Irshadat (Hindi)

رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ

हज़रते सुफ़यान सौरी के 87 इरशादात

(सफ़़हात : 16)



घर आई दौलत वापस कर दी 02

दुनिया की मिसाल 09

फ़राइज़ के बाद अफ़ज़ल अमल 04

सब से बुरी ख्वाहिश 11

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के 87 इरशादात⁽¹⁾

दुआएं अन्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला “सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के 87 इरशादात” पढ़ या सुन ले उस के दिल में दुनिया की महबूबत दूर फ़रमा कर उसे रूहानी सुकून नसीब फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे हिसाब बरख़्शा दे। اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सहाबिये मुस्तफ़ा हज़रते जाबिर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ के वालिदे गिरामी हज़रते समुरह सुवाई رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे आली वक्रार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ के दरबारे आलीशान में हाज़िर थे कि एक शख्स हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ ! अल्लाह पाक की बारगाह में सब से अच्छा अमल कौन सा है ? तो महबूबे खुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सच बोलना और अमानत अदा करना।” (राविये हदीस हज़रते समुरह رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि) मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ ! मज़ीद कुछ इरशाद फ़रमाइये ! फ़रमाया : “कसरते ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना कि येह अमल फ़क्र (यानी गुर्बत) को दूर करता है।” (القول البدیع، ص 273 مختصراً)

बहरे रफ़्ए मर्ज़ो ज़हमत व रंजो कुल्फ़त ढूँडते फिरते हैं वोह लोग कहां का तावीज़ तुम पढ़ो साहिबे लौलाक पर कसरत से दुरूद है अज़ब दर्दे निहां और अमां का तावीज़

(दीवाने काफ़ी, स. 24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

¹... येह रिसाला अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब “अल्लाह वालों की बातें” से तय्यार किया गया है।

घर आई दौलत वापस कर दी (वाक़िआ)

अज़ीम बुज़ुर्ग हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के भाई हज़रते मुबारक बिन सर्ईद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ज़िक्र करते हैं कि एक शख्स हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के पास दिरहम से भरी एक या दो थैलियां ले कर आया, उस के वालिद आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के दोस्त थे और आप उन के पास बहुत जाया करते थे, आने वाले ने अर्ज़ की : अबू अब्दुल्लाह (येह हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की कुन्यत है) ! क्या आप के दिल में मेरे वालिद की तरफ़ से कोई ना पसन्दीदा बात है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह पाक तुम्हारे वालिद पर रहम फ़रमाए, वोह तो ऐसे ऐसे थे (यानी आप ने उस के वालिद की तारीफ़ की) उस ने अर्ज़ की : अबू अब्दुल्लाह ! मैं चाहता हूं कि आप इन दराहिम को ले लीजिये और अपने घर पर खर्च कीजिये। आप रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने उस से वोह दिरहम ले लिये और जब वोह शख्स उठ कर वहां से निकलने लगा तो आप ने वोह थैली मुझे देते हुए फ़रमाया : मुबारक ! येह उसे दे दो और उस शख्स से फ़रमाया : ऐ मेरे दोस्त के बेटे ! मैं चाहता हूं कि येह माल तुम ले लो। उस ने अर्ज़ की : अबू अब्दुल्लाह ! क्या आप को उस के बारे में कोई शक है ? फ़रमाया : नहीं, लेकिन मैं येह चाहता हूं कि येह तुम ले लो। आप ने उसे कई मरतबा कहा तो वोह उसे ले कर चला गया। जब वोह चला गया तो मैं खुद को रोक न सका और अपने भाई हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से नाराज़ होते हुए अर्ज़ की : आप पर अफ़सोस है ! आप का दिल है या पत्थर ? क्या आप को मुझ पर रहम नहीं आता ? क्या हमारे और अपने बच्चों पर रहम नहीं आता ? उस के इलावा मैं ने उन्हें और भी बहुत कुछ कहा, आप रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : अल्लाह ! ऐ मुबारक ! मतलब येह कि तुम इस माल को मज़े से खाओ और उस का हिसाब मुझ से हो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/6)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो।
 اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने कि हज़रते अबू अब्दुल्लाह सुफ़यान बिन सईद सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले, दुनिया से बे रग़बत और दुनियावी माल के हिसाबो किताब से डरने वाले थे, आप रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का शुमार तबूए ताबेईन में होता है, आप बेहतरीन आलिम, मुहद्दिस, बहुत बड़े इबादत गुज़ार और अल्लाह पाक के वली थे।

आप के मक़ामो मरतबे और अज़मत व बुलन्दी को कई उलमाए किराम ने उजागर किया और कुतुब में इस का ज़िक्र किया बल्कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस क़दर बा बरकत बुजुर्ग हैं कि जो आप की सोहबत इख़्तियार करता या आप के वसीले से कोई बात करता तो उलमा की नज़र में उस की क़द्र भी अज़ीम हो जाती।

अज़ीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
 मुझे हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की महाफ़िल बहुत पसन्द हैं क्योंकि मैं जब भी उन्हें देखना चाहता तो कभी वरअ व तक्वा की हालत में, कभी नमाज़ पढ़ते हुए और कभी फ़िक्रही मस्अले में ग़ौर करते हुए देखता। (अल्लाह वालों की बातें, 6/497)

हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ पर ऐसे पुर हिक्मत और ईमान अफ़रोज़ अक़्वाल इरशाद फ़रमाए हैं कि अगर मुसलमान उन पर अमल करें तो उस से اِنْ شَاءَ اللهُ उनकी दुनिया व आख़िरत संवर सकती है। उन्हीं में से चन्द अक़्वाल कुछ तस्हील के साथ यहां पेश किये जा रहे हैं, अल्लाह पाक की रिज़ा पाने और इल्मे दीन हासिल करने की निय्यत से उन अक़्वाल को पढ़ें और निय्यत करें कि उन पर अमल भी करेंगे اِنْ شَاءَ اللهُ الْكَرِيْم

इल्मे दीन की अहमियत और तरगीब के बारे में 14 मदनी फूल

﴿1﴾ हजरते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : इल्म इस लिये हासिल किया जाता है ताकि उस के ज़रीए अल्लाह पाक का डर और तक्वा हासिल हो, इसी वजह से इल्म को फ़ज़ीलत दी गई है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/501)

﴿2﴾ इल्म सीखो और उस पर सब्र और बरदाश्त से काम लो और उस के साथ हंसी को मत मिलाओ वरना दिल पत्थर हो जाएंगे। (अल्लाह वालों की बातें, 6/502)

﴿3﴾ अपने ज़रीए इल्म को ज़ीनत बख़्शो इल्म के ज़रीए खुद को ज़ीनत मत दो। (अल्लाह वालों की बातें, 6/501) (मतलब यह कि इल्मे दीन की दौलत हासिल कर के अपने आप से जहालत को दूर करो और फिर उस इल्म को फैलाओ, यह नहीं कि इल्म इस लिये हासिल करो कि लोग आप की तारीफ़ करें या आप को बड़ा आलिम कहें।)

﴿4﴾ “इल्म” दीन का तबीब है और “दिरहम” दीन की बीमारी है, जब तबीब ही बीमारी को अपनी तरफ़ खींचेगा तो फिर दूसरे का इलाज कैसे करेगा ? (अल्लाह वालों की बातें, 6/501)

﴿5﴾ इल्म का सब से पहला दर्जा खामोशी, दूसरा तवज्जोह से सुनना और याद करना, तीसरा उस पर अमल करना और चौथा उसे फैलाना है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/502)

﴿6﴾ फ़राइज़ के बाद इल्म हासिल करने से अफ़ज़ल अमल और कोई नहीं है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/502)

﴿7﴾ आदमी को चाहिये कि अपनी औलाद को इल्म हासिल करने पर मजबूर करे क्योंकि उस से इस बारे में पूछा जाएगा। (अल्लाह वालों की बातें, 6/505)

﴿8﴾ हदीस शरीफ़ सोने चांदी से ज़ियादा है मगर इसे हासिल नहीं किया जाता ।

(यानी इसे हासिल करने वाले बहुत कम हैं।) (अल्लाह वालों की बातें, 6/503)

﴿9﴾ इल्मे हदीस इज़्ज़त ही इज़्ज़त है, जो इस के ज़रीए दुनिया चाहेगा तो दुनिया मिलेगी और जो आखिरत चाहेगा तो आखिरत मिलेगी ।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/505)

﴿10﴾ लोगों के लिये हदीस से बढ़ कर नफ़ामन्द (यानी फ़ाइदेमन्द) कुछ भी नहीं ।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/505)

﴿11﴾ अगर मुझे मालूम हो जाए कि कोई इख़लासे निय्यत के साथ इल्मे हदीस तलब करना चाहता है तो मैं ज़रूर उस के घर जा कर उसे हदीस सुनाऊँ ।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/506)

﴿12﴾ हदीस शरीफ़ सीखने से बढ़ कर अफ़ज़ल अमल कोई नहीं बशर्तकि निय्यत दुरुस्त हो ।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/506)

﴿13﴾ इल्म अमल के लिये ही हासिल किया जाता है तो अमल की वजह से इल्म हासिल करना छोड़ो न इल्म हासिल करने की वजह से अमल तर्क करो ।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/18)

﴿14﴾ (हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बहुत बड़े मुहद्दिस थे मगर उस के बावजूद आजिज़ी करते हुए फ़रमाते हैं :) मैं चाहता हूँ कि हदीस शरीफ़ के मुआमले में बराबर बराबर छूट जाऊँ (यानी सवाब मिले न पकड़ हो) ।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/78)

इबादत के बारे में 3 मदनी फूल

﴿1﴾ जब मैं क़ुरआने पाक पढ़ता हूँ तो दिल चाहता है यहीं ठहर जाऊँ और उस के इलावा किसी चीज़ की तरफ़ न बढ़ूँ ।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/506)



﴿2﴾ तिलावते कुरआन में (ज़ियादा) खूबसूरती उस वक़्त आती है जब उस में ज़ोहद (यानी तिलावत करने वाले के दिल में दुनिया से बेरग़बती) भी शामिल हो जाए।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/44)

﴿3﴾ हज़रते सय्यिदुना यहया बिन यमान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से सुवाल किया : अबू अब्दुल्लाह ! इबादत कहां अच्छी होती है ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : जहां रोटियों का बड़ा थैला एक दिरहम का मिलता हो ताकि कोई किसी दूसरे की तरफ़ सुवालिया नज़रों से न देखे । (अल्लाह वालों की बातें, 7/26) (मतलब यह कि इबादत उस मक़ाम पर ज़ियादा सुकून से होती है जहां लोगों की बुन्यादी ज़रूरतें आसानी से पूरी हो जाएं जैसे खाने पीने की चीज़ें सस्ती हों, ताकि कोई भूक या मोहताजी की वजह से दूसरों के सामने सुवाल या उम्मीद भरी नज़र न उठाए।)

ख़ौफ़े ख़ुदा के बारे में 3 मदनी फूल

﴿1﴾ अल्लाह पाक बन्दे पर उस हाज़त में ज़रूर इन्आम फ़रमाता है जिस में वोह अल्लाह पाक की बारगाह में कसरत से गिड़ागिड़ाता है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/17)

﴿2﴾ जब हम दीन में कोई सख़्त वर्इद या डराने वाली बात सुनते हैं तो डर जाते हैं और जब रहमत या नर्मी वाली बात सुनते हैं तो मुसलमानों के लिये उस की उम्मीद रखते हैं। हम न फ़ौत होने वालों पर (जन्नती या दोज़ख़ी होने का) फ़ैसला सुनाते हैं और न ज़िन्दों का हिसाब करते हैं। जिन बातों का हमें इल्म नहीं होता उन्हें इल्म वालों के हवाले कर देते हैं और उन की राय को अपनी राय से बेहतर मानते हैं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/41)

﴿3﴾ जब तक ख़ौफ़े ख़ुदा की शिद्दत न हो इबादत पर इस्तिक़्ामत पाना मुश्किल है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/501 मुलाख़ख़सन)

हुब्बे माल और दुनिया से बे रग़बती के बारे में 20 मदनी फूल

﴿1﴾ दुनिया को दुनिया इस लिये कहते हैं कि यह “दनिय्या यानी घटिया” है और माल को माल इस लिये कहते हैं कि यह मालदार को टेढ़ा कर देता है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/16)

﴿2﴾ माल को माल इस वजह से (भी) कहा जाता है कि वोह दिलों को माइल करता है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/531)

﴿3﴾ लोगों की रिज़ामन्दी की ऐसी इन्तिहा है जिस तक नहीं पहुंचा जा सकता और तलबे दुनिया की भी एक इन्तिहा है मगर उस तक भी रसाई नहीं हो सकती। (अल्लाह वालों की बातें, 6/531) (यानी सब लोगों को खुश रखना मुम्किन नहीं है और ऐसे ही दुनियावी ख्वाहिशात कभी ख़त्म नहीं होतीं।)

﴿4﴾ बद मज़ा खाना खाना और खुरदरा लिबास पहनना दुनिया से बे रग़बती नहीं बल्कि दुनिया से बे रग़बती तो उम्मीदों का छोटा होना (यानी मौत को पेशे नज़र रखना) है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/531)

﴿5﴾ अगर तुम्हें खाने से सिर्फ़ पेट भरने की ज़रूरत हो तो उस के लिये सुवाल मत करो। अगर तुम्हें नमक की ज़रूरत हो तो सुवाल मत करो और यह जान लो कि जो रोटी तुम ने खानी है नमक मिला कर उस का आटा गूंध दिया गया है और तुम्हें पानी पीने की ज़रूरत हो तो अपने हाथों का इस्तिमाल करो यह पानी के बरतन का काम देंगे।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/526)

﴿6﴾ मालदार भी ज़ाहिद (दुनिया से बे रग़बत) हो सकता है जब कि मुसीबत पर सन्न करे और नेमत पर शुक्र करे।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/532)

﴿7﴾ जब बन्दा दुनिया से बे रग़बत हो जाता है तो अल्लाह पाक उस के दिल में हिक़मत भर देता है फिर उस हिक़मत को उस की ज़बान पर जारी फ़रमाता है और उसे

दुनिया के उयूब, उस की बीमारियां और उन बीमारियों का इलाज भी दिखा देता है।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/535)

﴿8﴾ अल्लाह पाक की वोह नेमत जो मुझ से दुनिया को दूर कर दे उस नेमत से बड़ी है जो मुझे अता करे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/76) (यानी अल्लाह पाक की सब से बड़ी नेमत यह है कि वोह दुनिया की महब्बत और लालच को मेरे दिल से निकाल दे, यह नेमत उस से भी बड़ी है कि वोह मुझे दुनिया की दौलत अता करे।)

﴿9﴾ दुनियादारों की ताज़ीम करने वाले आलिम में कोई भलाई नहीं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/65)

﴿10﴾ मैं किसी की दुनिया से महब्बत को उस के दुनियादारों को सलाम करने से जान लेता हूं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/65)

﴿11﴾ मैं ने एक दिरहम भी कभी इमारत बनाने में खर्च नहीं किया। (अल्लाह वालों की बातें, 7/31) (आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का येह अमल दुनिया से बे रगबती के आला दर्जे की दलील है।)

﴿12﴾ अगर तुम्हें इस बात की इस्तिताअत है कि अपनी ज़िन्दगी में (बिला ज़रूरत और बिला हाजते शरई) किसी से मेल जोल न रखो तो ऐसा ही करो, अपने सामाने ज़रूरत की दुरुस्ती की फ़िक्र में लगे रहो, हुक्मरानों के पास जाने से बचो, तुम्हें उन से जो ज़रूरत हो वोह अल्लाह पाक से मांगो, पेश आने वाली हर बात में अल्लाह पाक की पनाह लाज़िम पकड़ो, तमाम लोगों से बे नियाज़ रहो और अपनी ज़रूरतें उसके सामने रखो जिस की बारगाह में ज़रूरतों की कोई हैसियत नहीं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/12)

﴿13﴾ साहिबे बसीरत शाख्स की निगाह में दुनिया का अक्सर हिस्सा बदतरीन है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/28)

﴿14﴾ जिस भी शख्स को दुनिया से कुछ दिया गया उस से येह कहा गया कि “इसे ले और इस के बराबर ग़म भी ले।” (अल्लाह वालों की बातें, 7/29)

﴿15﴾ जोहद इख़्तियार करो अल्लाह पाक दुनिया के राज़ तुम पर ज़ाहिर फ़रमा देगा, परहेज़गारी इख़्तियार करो अल्लाह तुम्हारे हिसाब में नर्मी फ़रमाएगा, मशकूक काम छोड़ कर वोह काम करो जो तुम्हें शक में न डालें और शक को यक़ीन से ज़ाइल करो इस से तुम्हारा दीन सलामत रहेगा। (अल्लाह वालों की बातें, 7/29)

﴿16﴾ अगर तुम आख़िरत में रग़बत की वजह से दुनिया को नहीं छोड़ सकते तो इस अन्देशे से छोड़ दो कि येह बेकार ज़मीन और बीमार ऊंटों का अस्तबल है जिस में तुम जैसे लोगों की कसरत है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/30)

﴿17﴾ जिस नेक अमल की वजह से तुम फ़ौत शुदा लोगों पर रश्क करते हो, वोही ख़ूबी अगर किसी ज़िन्दा शख्स में देखो तो उस पर भी रश्क करो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/30 मुलाख़ख़सन) (यानी सिर्फ़ मरने के बाद नेकियों की क़द्र न करो बल्कि ज़िन्दों में भी नेकी देख कर उन की क़द्र करो।)

﴿18﴾ जब भी दुनिया से हमारे पास कुछ आया तो हम ने येही चाहा कि उस पर राज़ी कोई शख्स मिल जाए तो येह उसे दे दें। (अल्लाह वालों की बातें, 7/31)

﴿19﴾ दुनिया की मिसाल शहद लगी रोटी की तरह है, अगर उस पर कोई मख़वी बैठती है तो वोह रोटी उसे परों से महरूम कर देती है और अगर वोह ख़ुश्क़ रोटी पर बैठे तो महफ़ूज़ रहती है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

﴿20﴾ तुम्हारे लिये दुनिया में सब से अच्छी चीज़ वोह है जो तुम्हें दुनिया में आज़माइश में न डाले और अगर तुम किसी चीज़ में आज़माइश में मुब्तला हो जाओ तो तुम्हारे लिये बेहतर येही है कि वोह चीज़ तुम्हारे पास से निकल जाए ताकि तुम आज़माइश से बच सको। (अल्लाह वालों की बातें, 7/30 मुलाख़ख़सन)

(यानी अस्ल भलाई इस में है कि दुनियावी चीज़ तुम्हारे लिये फ़ितना या गुनाह का सबब न बने और अगर बन रही है तो उस का न होना ही तुम्हारे हक़ में बेहतर है।)

मौत, क़ब्र और आख़िरत के बारे में 12 मदनी फूल

❶ जिस तरह तुम्हें मौत का इल्म है अगर इसी तरह चौपायों को भी होता तो तुम्हें कोई भी मोटा ताज़ा जानवर खाने को न मिलता। (अल्लाह वालों की बातें, 6/538)

❷ मैं ने कभी अपने नफ़्स के इलाज से ज़ियादा दुश्वार इलाज किसी शै का नहीं किया, कभी वोह मेरे ख़िलाफ़ होता है और कभी मुवाफ़िक़।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/8)

❸ ऐ होशियार शख़्स ! ज़िन्दगी गदली है इस की सफ़ाई मौत और क़ब्र की हौलनाकी को याद करना है। लोगों ने सोच बिचार के बाद दुनिया को बुरा कहा है जो इन्दराइन के (कड़वे) फल की तरह ऊपर से ख़ूबसूरत और अन्दर से इन्तिहाई कड़वी है। ज़माने के हवादिसात हमेशा से इस के साथ जुड़े हुए हैं और इस की मुसीबतें पत्थरों पर बहते तेज़ पानी की तरह हैं। (अल्लाह वालों की बातें, 6/513)

❹ जब तू दुनिया से तक्रवे का तोशा ले कर नहीं जाएगा और मौत के बाद ऐसे शख़्स से मिलेगा जिस ने तक्रवा को अपना तोशा बनाया था तो तुझे शर्मिन्दगी होगी कि तू उस के जैसा क्यूं न हुवा और तू ने वैसी तय्यारी क्यूं न की जैसी उस ने की।

(अल्लाह वालों की बातें, 6/514)

❺ जब मुर्दा चारपाई पर होता है तो उस से कहा जाता है : लोगों से अपनी तारीफ़ सुनो।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

❻ जब किसी मरे हुए शख़्स का तज़्किरा हो तो (उस के बारे में) आम लोगों की बातों को अहमिय्यत न दो बल्कि इल्मो अक़ल वाले लोगों की बातों को अहमिय्यत दो।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/38)

﴿7﴾ मरने वाले के घर वालों को चाहिये कि वोह मरने वाले को कलिमए शहादत की तल्कीन⁽¹⁾ करें क्योंकि हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام जब उस की कमर को छूते हैं तो उस की बोलने और पहचानने की सलाहियत खत्म हो जाती है, फिर वोह जान कनी की तक्लीफ़ का जाम पीता है, अगर उस वक़्त उस के हाथ में तल्वार हो तो कुदरत पाने पर बाप को भी क़त्ल कर दे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/71)

﴿8﴾ लोग सो रहे हैं जब मरेंगे तो बेदार हो जाएंगे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/72)

﴿9﴾ आंखों का देखना दुनिया से और दिल का देखना आखिरत से है। बेशक बन्दा आंखों से देखता है तो उस से कोई फ़ाइदा हासिल नहीं कर पाता और अगर वोह दिल से देखता है तो फ़ाइदा हासिल करता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

﴿10﴾ सब से बुरी ख्वाहिश यह है कि तुम आखिरत वाले अमल से दुनिया तलब करो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/74)

﴿11﴾ मैं दुनिया से आखिरत की तरफ़ कूच करने वाले मोमिन की मिसाल उस बच्चे से देता हूँ जो रेहमे मादर (यानी मां के पेट) की घुटन से निकल कर दुनिया की राहत पाता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/32)

﴿12﴾ हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ यह शेर मिसाल के तौर पर पेश फ़रमाया करते थे:

① ... जान कनी की हालत में जब तक रूह गले को न आए फ़ौत होने वाले को तल्कीन करें यानी उस के पास बुलन्द आवाज़ से पढ़ें: (صلى الله عليه وآله وسلم): أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ (मगर उसे पढ़ने का हुक्म न करें। (जौहरए नथिरा, स. 130)

नीज़ जब उस ने कलिमा पढ़ लिया तो तल्कीन रोक दें, हां अगर कलिमा पढ़ने के बाद उस ने कोई बात की तो फिर तल्कीन करें कि उस का आखिरी कलाम “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ” हो। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّهُ عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है कि जिस का आखिरी कलाम “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” हो वोह जन्नत में दाखिल होगा।

(ابوداود، 3/255، حدیث: 3116-عالمگیری، 1/157)



بَاعُوا جَدِيدًا جَبِيلًا بِاقْتِبَا أَبَدًا بَدَارِسِ خَلْقٍ يَا بَيْتُسَ مَا اتَّجَرُوا

तर्जमा : उन्होंने ने नई खूबसूरत और हमेशा बाक्री रहने वाली (आखिरत) को पुरानी और मिटने वाली (दुनिया) के बदले बेच दिया, उन की तिजारत कितनी बुरी है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/9)

शोहरत से बचने के बारे में 7 मदनी फूल

﴿1﴾ मैं मक्का व मदीना में गरीब, बे सहारा और इबादत गुज़ार लोगों के दरमियान रह कर दिली सुकून पाता हूं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/10)

﴿2﴾ शोहरत से बचो, मैं जिस बुजुर्ग के भी पास गया उन्होंने ने मुझे शोहरत से रोका, जान पहचान कम रखो तुम्हारी गीबत कम होगी। पोशीदा रहने में आफ़ियत है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/33)

﴿3﴾ किसी को भी दोस्त बना लो फिर उसे नाराज़ कर दो और फिर किसी को उस के पास भेज कर अपने बारे में उस की राय मालूम कर के देख लो (कि वोह तुम्हारी कैसी मुखालफ़त करता है)। (अल्लाह वालों की बातें, 7/13)

﴿4﴾ जो तुम से वाक्फ़ि न हो उसे अपने बारे में न बताना और जो तुम्हें जानता हो उस के बारे में जानने की कोशिश न करना। (अल्लाह वालों की बातें, 7/13)

﴿5﴾ जाहो मन्ज़िलत की महबूबत से बचना क्यूंकि इस से मुंह मोड़ना दुनिया से मुंह मोड़ने से भी ज़ियादा मुश्किल है। (अल्लाह वालों की बातें, 6/531)

﴿6﴾ मैं चाहता हूं मैं ऐसी जगह होऊं जहां पहचाना जाऊं न रुस्वा किया जाऊं। (अल्लाह वालों की बातें, 6/534)

﴿7﴾ मैं ने किसी भी शै को छोड़ना ओहदा व सरबराही छोड़ने से ज़ियादा आसान देखा है। तुम देखोगे कि कोई शख्स खाना, पानी, माल और कपड़े तो छोड़ सकता है

मगर जब उस से ओहदा व सरबराही के मुआमले में झगड़ा किया जाए तो वोह उस का दिफ़ाअ करेगा और दुश्मनी पर उतर आएगा। (अल्लाह वालों की बातें, 7/56)

मुतफ़रिक् बातों के बारे में 28 मदनी फूल

﴿1﴾ शरीर लोगों से खैर की उम्मीद रखना तअज्जुब की बात है।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/72)

﴿2﴾ जब तुम्हें अपने नफ़्स की पहचान हो जाएगी तो फिर तुम्हें अपने बारे में की जाने वाली बातें कोई नुक्सान नहीं देंगी। (अल्लाह वालों की बातें, 6/535)

﴿3﴾ ज़ालिम का चेहरा देखना भी ख़ता है और गुमराह गर पेशवाओं को देखना पड़े तो उन्हें दिल में बुरा जानो वरना कहीं तुम्हारे आमाल बर्बाद न हो जाएं।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/57)

﴿4﴾ अमीरों के घरों को न देखो और जब वोह सुवारियों पर कहीं से गुज़रें तो उन्हें भी मत देखो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/57)

﴿5﴾ जिस ने ज़ालिम के लिये लम्बी उम्र की दुआ की उस ने पसन्द किया कि अल्लाह पाक की नाफ़रमानी की जाए। (अल्लाह वालों की बातें, 7/65)

﴿6﴾ अन्न सब्र के बराबर मिलता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/75)

﴿7﴾ वोह शाख्स अ़ालिम व समझदार नहीं जो आफ़त व आजमाइश को नेमत और आसूदगी को मुसीबत न समझे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/76)

﴿8﴾ हम ने दीनो दुनिया में हम खयाल दोस्त से ज़ियादा नफ़ा बख़्श कोई शै नहीं पाई। (अल्लाह वालों की बातें, 7/78)

﴿9﴾ अल्लाह पाक की हम्द ज़िक्र भी है और शुक्र भी, इस के इलावा किसी चीज़ में एक साथ ज़िक्र और शुक्र नहीं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/78)

﴿10﴾ लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा जिस में (हालात में खराबी के पेशे नज़र) किसी समझदार की आंख ठन्डी न होगी। (अल्लाह वालों की बातें, 7/17)

﴿11﴾ तुम्हें चाहिये कि ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के लिये दरमियानी राह इस्तिथार करो और सरकश लोगों की मुशाबहत इस्तिथार करने से बचो, खाने, पीने लिबास और सुवारी से वोह चीज़ें इस्तिथार करो जो घटिया न हों नीज़ मुत्तक्री, अमानतदार और खौफ़े खुदा रखने वालों से मश्वरा लिया करो। (अल्लाह वालों की बातें, 7/19)

﴿12﴾ दोनों मुहाफ़िज फ़िरिश्ते नेकियों और बुराइयों की बू उस वक़्त पाते हैं जब दिल पुख़्ता इरादा कर लेता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/22)

﴿13﴾ जब सूरज मग़रिब से तुलूअ होगा तो मलाइका अपने सहीफ़े लपेट लेंगे और क़लम रख देंगे। (अल्लाह वालों की बातें, 7/23)

﴿14﴾ शैतान की कमर तोड़ने के लिये لا اله الا الله कहने से ज़ियादा बड़ी कोई चीज़ नहीं और सवाब में इज़ाफ़ा करने वाले कलामों में الْحَمْدُ لِلّٰهِ जैसा कोई कलाम नहीं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/23)

﴿15﴾ गुमान दो तरह का है, एक वोह जिस में गुनाह है। दूसरा वोह जिस में गुनाह नहीं। गुनाह वाला येह है कि ज़बान पर आ जाए और ज़बान पर न आए उस में गुनाह नहीं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/23)

﴿16﴾ अगर यक़ीन दिल में ऐसा क़रार पकड़ ले जैसा होना चाहिये तो दिल जन्नत के शौक़ की वजह से खुश हो जाएगा या जहन्नम के खौफ़ से ग़मगीन।

(अल्लाह वालों की बातें, 7/26)

﴿17﴾ जब तुम्हें किसी सस्ते अलाक़े का इल्म हो तो वहां चले जाओ क्यूंकि वोह तुम्हारे दीन के लिये ज़ियादा सलामती वाला और तुम्हारे लिये तोहमत को ज़ियादा कम करने वाला है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/26)

﴿18﴾ हज़रते सय्यिदुना वकीअ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से मरवी है कि हम ईद के दिन हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के हमराह निकले, आप रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : आज के दिन हमारा पहला काम निगाहें झुकाना है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/32)

﴿19﴾ ख्वाहिशात, झगड़े और हाकिम से दूर रहना। (अल्लाह वालों की बातें, 7/41)

﴿20﴾ जिस का बातनि उस के ज़ाहिर से अच्छा हो तो येह फ़ज़ल है और जिस का बातनि उस के ज़ाहिर से बुरा हो तो येह ज़ल्म है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/44)

﴿21﴾ क़ौल, अमल के साथ ही दुरुस्त है और क़ौल व अमल दोनों नियत के साथ ही दुरुस्त हैं और क़ौल, अमल और नियत सुन्नत की मुवाफ़क़त के साथ ही दुरुस्त होते हैं। (अल्लाह वालों की बातें, 7/47)

﴿22﴾ जब अल्लाह पाक किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे क़ौल व फ़ेल की दुरुस्ती अता फ़रमाता है और उसे गुनाहों से महफूज़ रखता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/49)

﴿23﴾ जिस ने किसी बद मज़हब की बात तवज्जोह से सुनी और उसे उस का बद मज़हब होना मालूम था तो वोह अल्लाह पाक की अमान से निकल कर नफ़्स के सिपुर्द कर दिया गया। (अल्लाह वालों की बातें, 7/49)

﴿24﴾ शिकम सैरी (यानी पेट भरने) से बचो कि येह दिल सख़्त करती है, गुस्सा पी जाया करो और ज़ियादा न हंसो कि येह दिलों को मुर्दा करता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/52)

﴿25﴾ अपने घर वालों के साथ अच्छी तरह रहो और ऐसे हो जाओ कि तुम्हारी हालत से मौत की याद आ जाए। (अल्लाह वालों की बातें, 7/72)

﴿26﴾ ”لَا تَتَكَلَّمْ بِسَانَكَ مَا تَكْسِرُ بِهِ أَسْنَانَكَ“ यानी अपनी ज़बान से ऐसी बात न निकालो जो तुम्हारे दांत तुड़वा दे। (अल्लाह वालों की बातें, 6/536)

﴿27﴾ सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन यूनस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ को बे शुमार मरतबा येह दुआ मांगते सुना कि “ऐ अल्लाह ! हमें सलामत रख, हमें सलामत रख, ऐ अल्लाह ! इस दुनिया से हमें सलामती के साथ जन्नत तक ले जा, ऐ अल्लाह हमें दुनिया व आखिरत में आफ़ियत अता फ़रमा।” (अल्लाह वालों की बातें, 6/538)

﴿28﴾ रहमते इलाही की उम्मीद रखने वाला फ़ासिक उस इबादत गुज़ार से अल्लाह पाक के ज़ियादा करीब है जो इन्आमाते बारी तआला के हुसूल का ज़रीआ सिर्फ़ अपने अमल को समझता है। (अल्लाह वालों की बातें, 7/55)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक्ररीबात, इज्तिमाआत, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मकतबतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक्रसीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अदद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

اگلے ہفتے کا ریسالہ



DAWAE ISLAMI
INDIA

CGN
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ
maktaba-madina.com

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099



www.maktabatulmadina.in



feedbackmmhind@gmail.com



For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply)



+91-9978626025